Volume-5, Issue-1, January -2016 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Social Science

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गुर्जर जाति की वेशभूषा : एक सर्वेक्षण

Dr. Krishna Kant Sharma ऐसोसिएट प्रोफेसर, एम०एम० (पी०जी०) कॉलिज, मोदीनगर

Deepak Kumar शोधार्थी, एम०एम० (पी०जी०) कॉलिज, मोदीनगर

KEYWORDS :

गुर्जर समाज प्राचीन समाजों में से एक है। यह समुदाय गुज्जर, गूजर, गोजर, गूर्जर और वीर गुर्जर आदि नामों से जाना जाता है। गुर्जर मुख्यतः उत्तर भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में बसे हैं। इस जाति का नाम अफगानिस्तान के राष्ट्रगान के तृतीय पद में आता है। गुर्जरों के ऐतिहासिक प्रभाव के कारण भारत और पाकिस्तान के बहुत से स्थान गुर्जर जाति के नाम पर रखे गये हैं, जैसे कि भारत का गुजरात राज्य, पाकिस्तानी पंजाब का गुजरात जिला, गुजरॉवाला जिला और रावलपिंडी जिले का गूजर जान शहर आदि।1

गुर्जर जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित है। मिहिर भोज (836–885 ई०) के ग्वालियर प्रशास्ति के अनुसार में सूर्यवंशी या रघुवंशी हैं। प्राचीन कवि राजशेखर ने गुर्जरों को रघुकुल तिलक तथ रघुग्रामिणी कहा है। राजस्थान में आज भी गुर्जरों को सम्मान से मिहिर बोलते हैं, जिसका अर्थ सूर्य होता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार गुर्जर मध्य एशिया के कॉकस क्षेत्र (वर्तमान के अबीसीनिया और जार्जिया) से आए योद्धा थे।2 संस्कृत के विद्वानों के अनुसार, गुर्जर शुद्ध संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ शत्रु का नाश करने वाला अर्थात् शत्रु विनाशक होता है। प्र. ाचीन कवि राजशेखर ने गुर्जर नरेश महिपाल को अपने महाकाव्य में दहाड़ता गुर्जर कहकर सम्बोधित किया है।

इतिहासकारों का मत है कि गुर्जरों का उदय कान्यकुण्ज (कन्नौज) में हुआ। चीनी यात्री ह्वेनसांग अपने लेखों में गुर्जरों का उल्लेख करता है तथा इसे श्ज्ञपव.बेप.प्व बोलता है। छठी शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक गुर्जर कई जगह सत्ता में थे। गुर्जर प्रतिहारों की सत्ता कन्नौज से लेकर बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात तक फैली थी। 12वीं शताब्दी के बाद गुर्जर प्रतिहार वंश का पतन शुरू हो गया और ये कई हिस्सों में बँट गये। अरब आक्रांताओं ने गुर्जरों की शान्ति तथा प्रशासन की अपने अभिलेखों में भूरी–भूरी प्रशंसा की है। नेरेटिव्स 1858 के अनुसार 1857 की क्रा. न्ति में गुर्जर तथा राजपूत ब्रिटिश के बहुत बुरे दुश्मन साबित हुए। गुर्जरों का 1857 की क्रान्ति में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

वर्तमान सन्दर्भ में देखें तो स्पष्ट होता है कि गुर्जर महाराष्ट्र, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू–कश्मीर जैसे राज्य में फैले हैं। सामान्यतः गुर्जर हिन्दू, मुस्लिम, सिख आदि धर्मों में देखे जाते हैं। उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में देखें तो काफी बड़ी संख्या में गुर्जर मुस्लिम धर्म में परिवर्तित हुए। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इनकी संख्या अधिक है।3

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गुर्जर जाति एक समृद्ध वर्ग के रूप में विकसित है। ये लोग अच्छे जमींदार हैं। इस समुदाय ने पाश्चात्यकरण के इस दौर में भी अपनी एक विशेष पहचान बनाये रखी है। खान–पान, रहन–सहन, भाषा एवं वेशभूषा आदि में इसकी अन्य समुदायों से भिन्नता है, इनमें वेशभूषा का एक अलग महत्व है। इस समाज की वेशभूषा अत्यन्त आकर्षक है, जो इसे अन्य समाज से अलग करती है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की गुर्जर जाति में महिलाएँ औन्ना नामक एक वस्त्र अधिवास के रूप में प्रयोग करती है। (चित्र सं०–1) इसका अनुपात 2 : 3 होता है। यह एक विशेष प्रकार से गोटे से युक्त होता है। इस औन्ना (ओढनी) का प्रयोग विवाहित महिलाएँ प्रायः घर से बाहर निकलने पर करती हैं। जिसके प्रयोग करने का प्रमुख उद्देश्य शरीर के ऊपरी भाग का पूर्णतः ठक जाना होता है।4 यह प्राचीन परम्परा है जिसे वर्तमान में गुर्जर समाज की स्त्रियाँ अपनाये हुए हैं। इस ओढनी का प्रचलन ग्रामीण क्षेत्रों में ही सिमट कर रह गया है, शहरी क्षेत्रों में यह विलुप्त प्रायः हैं। बढ़ता पाश्चात्यीकरण इस परम्परा को भी ठेस पहुँचा रहा है। बहुधा यह देखा गया है कि नवविवाहित वधू इस विशेष प्रकार के अधिवास के प्रयोग से परहेज करने लगी है जि. ससे गुर्जर समाज के समक्ष अपनी इस सांकेतिक वेशभूषा को बचाना एक चुनौती है।

चित्र सं०–1 औन्ना की आकृति

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में महिलाएँ वास के रूप में वृद्ध स्त्रियाँ कुर्ती पहनती हैं जो कि किनारो पर खुले चाक से युक्त होती है। (चित्र सं०–2) यह कुर्ती महिलाओं हेतु आरामदायक होती है, इसकी संरचना कुछ हद तक आधुनिक कमीज की भाँति होती है।5 यद्यपि मूल रूप में यह भिन्नता बनाये हुए है। वर्तमान में यह भी धीरे–धीरे विल. ुप्त हो रही है क्योंकि इसका प्रयोग वृद्ध महिलाओं तक ही सीमित हो चुका है। आध ुनिक महिलाएँ सूट–सलवार, साड़ी आदि का प्रयोग करती हैं। अविवाहित युवतियाँ सूट का प्रयोग करती हैं, तो वही विवाह के पश्चात सूट–सलवार एवं साड़ी दोनों का प्रयोग किया जाता है।

चित्र सं०–2 कुर्ती की आकृति

गुर्जर समाज की महिलाओं की सर्वाधिक आकर्षक वेशभूषा उनके द्वारा प्रयुक्त घाघ. रा है। इसका आकार 52 गज होता है परन्तु धीरे–धीरे इसका आकार 52 गज से घटकर 32 गज या 20 गज ही रह गया है। (चित्र सं०–3) इसका प्रयोग वृद्ध म. हलाएँ ही करती हैं। यह वर्तमान में ग्रामीण समाज में प्रयुक्त वेशभूषा है। शहरी क्षेत्रों में यह विलुप्ति के कगार पर है। यह वस्त्र गुर्जर समाज की महिलाओं को विशेष आकर्षण प्रदान करता है। चूँकि इस घाघरा का वजन अधिक होता है इसलिए धीरे–ध ीरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इसका प्रयोग घट रहा है परन्तु यह फिर भी अपनी एक विशेष महत्ता को प्रकट करता है।6

चित्र सं०–3 घाघरा की आकृति

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अविवाहित युवतियों की वेशभूषा अन्य समाज की वेशभूषा से समानता रखती है, ये भी अन्य समाज की युवतियों की भांति सूट–सलवार, अल्प मात्रा में पेंट–शर्ट, टॉप आदि पहनती हैं। स्त्रियों की भांति पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पुरूषों की वेशभूषा भी आकर्षक है जो उसे शेष समुदायों से भिन्नता प्रदान करती है। नवयुवक आज के प्रचलन की भांति पेंट–शर्ट पहनता है परन्तु उम्रदराज व्यक्ति ध ोती–कुर्ता, पायजामा, टोपी आदि का प्रयोग करता है।

वृद्ध पुरूष सामान्यतः धोती पहनते हैं जो कि 2 से 4 मीटर के आकार की होती है। यह सामान्यतः खादी वस्त्र की होती है। (चित्र सं०–4) इसको पहनने हेतु विशेष अभ्यास की आवश्यकता है, धोती का प्रयोग पुरूष सामान्यतः गर्मी एवं बरसात के मा. ैसम में करते हैं। सर्दी के दिनों में पायजामा का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि धोती सामान्यतः खादी कपड़े की होती है जो कि सर्दी हेतु प्रयुक्त नहीं की जा सकती।7 अतः इसका प्रयोग मौसमी वेशभूषा के रूप में किया जाता है। इसके अलावा गुर्जर पुरूष कुर्ते का प्रयोग करते हैं, जो कि भिन्न–भिन्न प्रकार के कपड़ों से बना एवं भिन्न–भिन्न माप का होता है। पुरूष इसे अपनी सुविधानुसार पहनता है। इसका प्रचलन ग्रामीण समुदाय में अधिक एवं शहरी समुदाय में अल्प मात्रा में किया जाता है। शहरी परिवेश में सामान्यतः वर्तमान प्रचलन के अनुसार वस्त्र पहने जाते हैं।8

चित्र सं०–4 धोती की आकृति

गुर्जर जाति के पुरूषों की एक अन्य विशेष पहचान इनके द्वारा सिर पर नुकीली टोपी का प्रयोग करना है। (चित्र सं०–5) ये लोग सामान्यतः सफेद रंग की टोपी सिर पर पहनते हैं, जिसका वैज्ञानिक कारण भी है। यह टोपी मनुष्य के सिर को गर्मी के दिनों में तेज प्रकाश से एवं सर्दी में तेज ठण्ड से सुरक्षित रखती है। चूँकि ऐसा माना जाता है कि मनुष्य को अधिकांश बीमारी सिर के माध्यम से शरीर में प्रविष्ट करती है। अतः इसके प्रयोग में जहाँ एक तरफ मनुष्य अवांछित व्याधियों से तो अपने आप को सुरक्षित रखता है ही साथ में यह मनुष्य के आकर्षण का भी केन्द्र बनती है। इस टोपी का प्रचलन वृद्ध पुरूषों (विशेषतः ग्रामीण समाज) में दृष्टिगोचर होता है। बच्चे एवं नवयुवक सामान्यतः पेन्ट–शर्ट पहनते हैं।9

चित्र सं०–5 टोपी की आकृति

भूमण्डलीकरण एवं बढ़ते पाश्चत्यीकरण के इस दौर में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गुर्जर अपनी वेशभूषा को संजोये हुए हैं। जहाँ एक तरफ कपड़ों का आकार पश्चिमी सभ्यता के अनुसार परिवर्तित हो रहा है तो वहीं गुर्जर समाज ने अपनी वेशभूषा जिनमें मुख्यतः ओन्ना, कुर्ती, घाघरा (महिला पोषाक), धोती, कुर्ता, नुकीली टोपी (पुरूष पोष. ाक) आदि के माध्यम से अपनी संस्कृति को गौरवान्वित किया है परन्तु यह वेशभूषा ग्रामीण क्षेत्रों में ही सिमट कर रह गयी है। शहरी क्षेत्रों में इसके लक्षण विलुप्ति के कगार पर हैं, जिनका संरक्षण आवश्यक है, जिससे गुर्जर समाज भारत की विविधता में एकता की संस्कृति के आयाम में अपना योगदान दे सके।

REFERENCES

एम०एस० वर्मा– 'देश–विदेश में गुर्जर क्या है और क्या थे'?, अखिल भारतीय गुर्जर समाज समिति, दिल्ली, 1984, पृष्ठ– 10 2. रतन लाल वर्मा– 'भारतीय संस्कृति के रक्षक', भारतीय गुर्जर समिति परिषद, दिल्ली, 1987, पृष्ठ– 25 3. एम०एस० वर्मा, वही, पृष्ठ– 15–16 4. कमलेश देवी, पत्नी श्री जबर सिंह का साक्षात्कार 5. जगवती पत्नी श्री राजसिंह का साक्षात्कार 6. तेजपाली पत्नी श्री जगमाल का साक्षात्कार 7. जगबीर सिंह बैंसला पुत्र श्री रणबीर बैंसला का साक्षात्कार 8. मा० ब्रहमसिंह पुत्र श्री नानक चन्द का साक्षात्कार 9. शैलेन्द्र कुमार पुत्र श्री राजसिंह बैंसला का साक्षात्कार